1 तीमुथियुस 5:22 (ERV-HI):
“किसी को जल्दबाज़ी में हाथ मत रखो और दूसरों के पापों में सहभागी मत बनो। अपने आप को शुद्ध बनाए रख।”

इस पद में प्रेरित पौलुस युवा कलीसियाई अगुवा तीमुथियुस को कुछ महत्वपूर्ण निर्देश देता है कि वह परमेश्वर की प्रजा का मार्गदर्शन बुद्धिमानी और न्यायपूर्वक कैसे करे। पौलुस को न केवल तीमुथियुस की सेवा की चिंता है, बल्कि उसकी व्यक्तिगत पवित्रता और आत्मिक विवेकशीलता भी उसके हृदय में है।

1. 1 तीमुथियुस 5 का प्रसंग

1 तीमुथियुस 5 में पौलुस कलीसिया के भीतर व्यवस्था और अनुशासन को लेकर व्यावहारिक निर्देश देता है विशेष रूप से विधवाओं की देखभाल (पद 3–16), प्राचीनों के चुनाव और उनके समर्थन (पद 17–25) तथा उनके विरुद्ध आरोपों से संबंधित मुद्दों पर। वह स्पष्ट करता है कि आत्मिक नेतृत्व चरित्र की अखंडता, परिपक्वता और भक्ति से युक्त जीवन के साथ होना चाहिए।

वह चेतावनी देता है कि किसी भी व्यक्ति पर जल्दबाज़ी में हाथ न रखा जाए यह “हाथ रखना” सार्वजनिक रूप से किसी को आत्मिक अगुवाई

के लिए नियुक्त करने या पुष्टि करने का कार्य है। यह केवल एक रस्म नहीं, बल्कि एक पवित्र कार्य है, जो आत्मिक परिपक्वता और परमेश्वर की बुलाहट की सार्वजनिक पुष्टि है। पौलुस जानता था कि यदि अयोग्य या अपरिपक्व व्यक्ति को नेतृत्व सौंप दिया जाए तो उसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

तीतुस 1:6–9 और 1 तीमुथियुस 3:1–7 आत्मिक अगुवों के लिए आवश्यक योग्यताओं को स्पष्ट रूप से बताते हैं: निष्कलंक, पत्नी के प्रति निष्ठावान, संयमी, मर्यादित, आतिथ्यशील, सिखाने में समर्थ, न लड़ाकू और न लोभी।

धार्मिक चेतावनी: यदि कोई बिना सोच-विचार किए किसी को नेतृत्व में नियुक्त करता है और बाद में वह व्यक्ति पाप में गिर जाता है, तो यह नियुक्ति करने वाला व्यक्ति उस पाप में सहभागी ठहर सकता है। इसलिए पौलुस चेतावनी देता है: “दूसरों के पापों में सहभागी मत बनो।”

2. दूसरों के पापों में सहभागिता

पौलुस की यह चेतावनी “दूसरों के पापों में सहभागी मत बनो” गहरी आत्मिक सच्चाई को प्रकट करती है। पाप में सहभागिता केवल प्रत्यक्ष रूप से नहीं होती, बल्कि जब हम सहमति देते हैं, चुप रहते हैं, अनुकरण करते हैं, या आवश्यक सुधार नहीं करते तब भी हम

सहभागी बनते हैं।

(a) पापपूर्ण आचरण का अनुकरण

विश्वासियों को संसार से और मांसिक जीवन जीने वाले अन्य मसीहियों से अलग रहना चाहिए।

रोमियों 12:2 (ERV-HI):
“और इस संसार के जैसे न बनो, बल्कि तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने के द्वारा तुम्हारा चाल-चलन बदलता जाए, जिससे तुम जान
सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है अर्थात् वह क्या भला, और क्या मनभावन और क्या सिद्ध है।”

इफिसियों 5:11 (ERV-HI):
“अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न बनो, बल्कि उन्हें
प्रगट करो।”

यदि एक मसीही होने के नाते तुम व्यभिचार, चुगली या बेईमानी जैसे पापों को देखते हो और फिर स्वयं भी वैसा ही करने लगते हो, तो तुम

अब केवल दर्शक नहीं रह जाते तुम स्वयं भी सहभागी हो जाते हो।

(b) पाप में पड़े अगुवों को सहन करना

पौलुस तीमुथियुस को यह भी चेतावनी देता है कि अगुवे भी पाप में गिर सकते हैं। ऐसे में कलीसिया को चुप नहीं रहना चाहिए। हालांकि प्राचीनों पर आरोप सावधानी से और दो या तीन गवाहों की पुष्टि के साथ ही लगाए जाने चाहिए।

1 तीमुथियुस 5:19–20 (ERV-HI):
“किसी प्राचीन के विरुद्ध आरोप मत सुन जब तक दो या तीन
गवाहों से पुष्टि न हो। जो पाप करते हैं, उन्हें सब के सामने डांट ताकि दूसरों को भी भय हो।”

यदि कलीसियाई सदस्य जान-बूझकर अगुवों के पापों जैसे वित्तीय दुरुपयोग, लैंगिक अशुद्धता या आत्मिक दमन को नज़रअंदाज़ करते हैं, तो वे भी उस पाप में सहभागी हो जाते हैं।

(c) सुधार के स्थान पर चुप रहना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

याकूब 5:19–20 (ERV-HI):
“मेरे भाइयों, यदि तुम में से कोई सत्य से भटक जाए, और कोई
उसे फेर लाए, तो वह जान ले कि जो किसी पापी को उसके मार्ग की भूल से फेर लाता है, वह उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाएगा और
बहुत से पापों को ढाँप देगा।”

प्रेम में किया गया सुधार दंड नहीं, बल्कि बाइबिलिक प्रेम का कार्य है। जो चुप रहता है जब सत्य की आवश्यकता होती है, वह पाप के फैलाव की अनुमति देता है जिसका प्रभाव सभी पर पड़ता है।

3. पाप में सहभागिता के दुष्परिणाम

जो दूसरों के पापों में सहभागी बनते हैं, वे उस पाप के परिणामों के लिए भी उत्तरदायी माने जाते हैं। परमेश्वर केवल हमारे अपने कार्यों को ही नहीं, बल्कि उन बातों को भी देखता है जिन्हें हम सहन करते हैं या प्रोत्साहित करते हैं।

नीतिवचन 17:15 (ERV-HI):
“जो दोषी को निर्दोष ठहराता है और जो निर्दोष को दोषी
ठहराता है दोनों ही यहोवा के दृष्टि में घृणित हैं।”

यदि हम पाप का समर्थन, सहन या अनुकरण करते हैं, तो हम भी उसी न्याय के अधीन होते हैं, जिस न्याय के अंतर्गत वास्तविक पापी है।

गलातियों 6:7–8 (ERV-HI):
“धोखा न खाओ। परमेश्वर ठट्ठों में उड़ाए जाने वाला नहीं है, क्योंकि जो मनुष्य जो बोता है, वही काटेगा। जो अपने शरीर के
लिए बोता है, वह शरीर से विनाश काटेगा; और जो आत्मा के लिए
बोता है, वह आत्मा से अनन्त जीवन पाएगा।”

पाप चाहे अक्सर किया जाए या कभी-कभी, यदि वह जानबूझकर और बिना पश्चाताप के किया गया हो, तो उसका परिणाम गंभीर होता है। चाहे वह लगातार पाप करने वाला हो या अवसर देखकर चुप रहने वाला दोनों ही परमेश्वर के न्याय के सामने एक जैसे खड़े होते हैं।

4. व्यक्तिगत पवित्रता का बुलावा

पौलुस इस अध्याय को एक गंभीर और सामर्थ्यशाली आह्वान के साथ समाप्त करता है: “अपने आप को शुद्ध बनाए रखो!” यह शुद्धता केवल नैतिकता की बात नहीं है, बल्कि आत्मिक दृष्टिकोण और सेवा में भी पवित्रता की पुकार है।

2 तीमुथियुस 2:21 (ERV-HI):
“इस कारण यदि कोई इन बातों से अपने आप को शुद्ध करेगा, तो वह आदर का पात्र, पवित्र और स्वामी के उपयोग के योग्य, हर अच्छे काम के लिए तैयार हो जाएगा।”

हर विश्वासी विशेषकर अगुवों को एक ऐसा जीवन जीना चाहिए जो निस्संदेह शुद्ध, पाप से रहित और पवित्र हो।

पौलुस की यह शिक्षा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। हमें जागरूक, विवेकशील और पवित्र जीवन जीना चाहिए। चाहे तुम कलीसिया के अगुवा हो या सदस्य किसी को जल्दबाज़ी में नियुक्त मत करो, दूसरों के पापों में सहभागी मत बनो, और अपने हृदय की रक्षा करते हुए जीवन जियो।

आओ इस चेतावनी को गंभीरता से लें और ऐसा जीवन जिएं जो प्रभु को प्रसन्न करे बिना किसी दोष या सहभागिता के, और मसीह के प्रकाश में चलते हुए।

मरानाथा — आ, हे प्रभु यीशु!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp